डेकार्ट एक बुद्धिवादी दार्शनिक हैं। जिसका लैटिन नाम कार्टेसियस है। इसलिए उसके दर्शन को कार्टेशियन दर्शन एवं दार्शनिक पद्धति को कार्टेशियन पद्धति कहते हैं।

डेकार्ट गणित से प्रभावित था और गणित के समान ही दर्शन के क्षेत्र में निश्चित एवं सार्वभौम ज्ञान प्राप्त करना चाहता था। इसीलिए उसने गणित के समान ही दर्शन के क्षेत्र में भी स्वयंसिद्धियों को मूल आधार के रूप में स्थापित करना चाहता था ताकि उनके आधार पर निश्चित एवं सार्वभौम ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

डेकार्ट ने निम्न 4 सूत्र दिये-

① सत्यता सूत्र
② विश्लेषण सूत्र
③ संश्लेषण सूत्र
④ समाहार सूत्र

① जब तक किसी ज्ञान की स्पष्टता (Clearity) एवं भिन्नता / परिस्पष्ट का ज्ञान न हो जाये तब तक उसकी सत्यता को स्वीकार नहीं करना चाहिए।

② समस्या को सरल से सरलतम टुकड़ों में विभक्त किया जाये ताकि प्रत्येक अवयव का स्वतन्त्र रूप से विवेचन हो सके।

③ सरलतम अवयव से समस्या का हल खोजते हुए जटिल अवयव की ओर बढ़ने का प्रयास करना चाहिए।

④ निष्कर्ष पर पहुँचने से पूर्व सम्पूर्ण प्रक्रिया का निरीक्षण कर लें ताकि विचार प्रक्रिया को निर्दोष बनाया जा सके।

* बुद्धि की शक्तियाँ :-

देकार्त बुद्धि का विश्लेषण करके बुद्धि की दो शक्तियों का निर्देश करते हैं-

① बुद्धि में निश्चित एवं सार्वभौम ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता।
② बुद्धि में यथार्थ ज्ञान एवं अयथार्थ ज्ञान में भेद करने की शक्ति।

परन्तु इसके लिए बुद्धि को समस्त पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों, पूर्वमान्यताओं, संस्कारों इत्यादि से मुक्त करना अनिवार्य है। देकार्त इसके लिए संदेह विधि का सहारा लेते हैं। इस विधि के क्रियान्वयन के क्रम में वे समस्त घटनाओं, वस्तुओं, क्रियाओं, मतों पर संदेह करते हैं। देकार्त के अनुसार जब संदेह प्रक्रिया में तार्किक विरोधाभास या विसंगति आ जाये तो हमें वहीं रुकना होगा और उसे असंदिग्ध ज्ञान के रूप में स्वीकार करना होगा।

देकार्त की यह संदेह विधि-

(1) उनके दर्शन का आरम्भ बिन्दु है, अन्त नहीं।

(2) तार्किक एवं सुव्यवस्थित है मनोवैज्ञानिक नहीं।

(3) साधन है साध्य नहीं।

(1)

देकार्त संदेह प्रक्रिया के क्रम में सबसे पहले इन्द्रिय ज्ञान पर संदेह करते हैं। उनके अनुसार इन्द्रियाँ हमें कभी-कभी गलत ज्ञान प्रदान करती है। जैसे- रेगिस्तान में जल का ज्ञान। देकार्त के अनुसार इन्द्रियों द्वारा प्रदत्त सही ज्ञान एवं रेगिस्तान में जल के गलत ज्ञान में कोई गुणात्मक भेद नहीं है। दोनों में ही इन्द्रिय संवेदनाओं की स्थिति दिखाई देती है। अतः हम तर्कतः सभी इन्द्रिय ज्ञानों पर उनके भ्रामक होने का संदेह कर सकते हैं।

(2)

देकार्त के अनुसार शारीरिक क्रियाओं पर भी संदेह किया जा सकता है। स्वप्न में हम कोई शारीरिक क्रिया नहीं करते हैं किन्तु हमें उसकी अनुभूति होती है। सम्भव है हम अभी भी स्वप्न की स्थिति में हो। अतः हम शारीरिक क्रियाओं पर उनके गलत होने का तर्कतः संदेह कर सकते हैं।

(3)

वैज्ञानिक ज्ञान भी संदेह से परेह नहीं है। विज्ञान स्वयं भी अपने निष्कर्षों को भविष्य में गलत होने की संभावना से इनकार नहीं करता है। विज्ञान के सिद्धान्त तभी तक सत्य माने जाते हैं। जब तक कोई नया सिद्धान्त इनका खण्डन न कर दे। पुनः देकार्त परम्परागत सिद्धान्तों, मतों एवं अवधारणाओं पर भी तर्कतः संदेह की स्थिति को स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार देकार्त प्रत्येक ज्ञान, क्रिया, घटना, वस्तु पर संदेह करते हैं। संदेह करने के लिए संदेह प्राक्रिया का होना आवश्यक है। संदेह प्राक्रिया एक चेतन प्राक्रिया है, से संदेहकर्ता (चेतनकर्ता) का अस्तित्व निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है। देकार्त के अनुसार मेरा संदेह सही हो सकता है, मेरा संदेह गलत हो सकता है परन्तु इस बात पर संदेह नहीं किया जा सकता है कि मैं संदेह कर रहा हूँ। अगर मैं अपने ऊपर भी संदेह करूँ तो वैसी स्थिति में भी संदेहकर्ता के रूप में 'मैं' का अस्तित्व सिद्ध होता है। यहाँ यदि यह कहा जाये कि संदेह करने वाले संदेहकर्ता का अस्तित्व नहीं है तो फिर ऐसी स्थिति में तार्किक व्याघात उत्पन्न हो जायेगा। इस प्रकार संदेह विधि से अपनी आत्मा ('मैं') का अस्तित्व निर्विवाद रूप से सिद्ध होता है। देकार्त इसे अपनी भाषा में "Cogito ergo sum' कहते हैं। इसे ही 'मैं सोचता हूँ इसलिए मैं हूँ।' या 'I think therefore I am' कहते हैं।

देकार्त का यह संशयवाद पुराने उग्र संशयवाद (पायरो) और ह्यूम के विभिन्न संशयवाद से भिन्न है। यहाँ संदेह एक विधि के रूप में प्रयुक्त किया गया है, निष्कर्ष के रूप में नहीं। यह संदेह प्रयोजनपूर्ण, व्यवस्थित एवं तार्किक है। यहाँ संदेह सार्वभौम, निश्चित ज्ञान की प्राप्ति का साधन है न कि साध्य।